पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.03.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
की ओर से
नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2072
एवम्
141 वें आर्य समाज स्थापना
दिवस की
हार्दिक बधाई व शुभकामनाऐं

वर्ष-31 अंक-19 फाल्गुन-2071 दयानन्दाब्द 191 01 मार्च से 15 मार्च 2015 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.03.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ ओ३म् ॥

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम
प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे, वीर शहीदों की समाधी बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक तन में एक बूंद भी लहु की बाकी है, भारत की आज़ादी को गुमनाम नहीं होने देंगे।

शहीदों की अमानत है – भारत की आजादी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 84वें बलिदान दिवस पर

राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आतंकवाद विरोधी दिवस

सोमवार, 23 मार्च 2015, प्रातः 10:00 बजे से 1:30 बजे तक

स्थान : जन्तर मन्तर रोड़, नई दिल्ली-110001

अध्यक्षता : श्री मायाप्रकाश त्यागी
(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा)

● **यज्ञ ब्रह्मा: आचार्य शिवराज शास्त्री**

मुख्य वक्ता

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री	श्री जयभगवान गोयल	स्वामी प्रणवानन्द जी
आचार्य सुधांशु जी	श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
श्री राजेश मेहन्दीरता	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	श्री संदीप आहूजा
श्री ओम सपरा, एडवोकेट	श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन'	श्री रविन्द्र मेहता
श्री जगदीश मलिक	श्रीमती गायत्री मीना	श्री रणसिंह राणा

आमन्त्रित आर्य नेता: सर्वश्री रविदेव गुप्ता, चत्तरसिंह नागर, रवि चड्डा, आ. प्रकाशवीर शास्त्री, जितेन्द्र डावर, अर्चना पुष्करणा, विम्मी अरोड़ा, जितेन्द्रसिंह आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना, वेदप्रभा बरेजा, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, अन्जु जावा, सन्तोष वधवा, विजयारानी शर्मा, लक्ष्मी सिन्हा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, कै. अशोक गुलाटी, उमा मोंगा, अरूणा मुखी, सरला वर्मा, सत्यदेव वर्मा, पुष्पलता वर्मा, देवदत्त आर्य, महावीरसिंह आर्य, अमीरचन्द रखेजा, अमरसिंह सहरावत, वेदप्रकाश, मुकेश सुधीर, यज्ञवीर चौहान, विनोद बजाज, सुधीर चन्द घई, ओमप्रकाश गुप्ता, ओमप्रकाश अग्रवाल, स्वर्ण गम्भीर, विजय गुप्त, विजय सचदेवा, गोपाल जैन, दिनेश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, वी.के. रैल्ली, हरिचन्द आर्य, सुमन नागपाल, चन्द्रमोहन कपूर, सरोज भाटिया, सुभाष कोछड़, भूदेव आर्य, विनोद कद, अमरनाथ बत्रा, मानवेन्द्र शास्त्री, रमेश योगी, प्रेमकान्त बत्रा, राजेन्द्र लाम्बा, रामसेवक आर्य, ओमवीरसिंह, विजय सब्बरवाल, सुधा वर्मा, लाला मेघराज आर्य, हरिचन्द स्नेही, अनिता कुमार, सत्यपाल सैनी, रमेश गाडी, अनिल हांडा, सौरभ गुप्ता, भगतसिंह राठी, अमरनाथ गोगिया, विजय कपूर, अरूण आर्य, सोहन लाल मुखी, ओम प्रकाश पाण्डेय, रघुनाथ सिंह यादव

आतंकवाद के विरूद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे

-: निवेदक :-

डा॰अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**यशोवीर आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**महेन्द्र भाई** राष्ट्रीय महामन्त्री	**रामकुमार सिंह** प्रान्तीय संचालक	**देवेन्द्र भगत** प्रेस सचिव	**विकास गोगिया** स्वागताध्यक्ष
कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**राकेश भटनागर** राष्ट्रीय मन्त्री	**सुशील आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**संतोष शास्त्री** प्रान्तीय महामन्त्री	**प्रवीन आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**दुर्गेश आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**विश्वनाथ आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**आनन्दप्रकाश आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**मनोहरलाल चावला** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**वीरेन्द्र योगाचार्य** राष्ट्रीय मन्त्री	**सुरेश आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री

कार्यालय:- आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोनः 9810117464, 9013137070

अफजल गुरु का शहीदी दिवस मनाने वाले कौन हैं

- अवधेश कुमार

दिल्ली चुनाव परिणाम और सरकार गठन के शोर में न जाने ऐसी कितनी महत्वपूर्ण खबरें नेपथ्य में चलीं गईं जिनका सामने आना एवं जिन पर बहस होना आवश्यक था। इसी में से एक है, संसद हमले मामले में फांसी पर चढ़ाए गए आतंकवादी अफजल गुरु का शहीदी दिवस मनाया जाना। हम जानते है। कि अफजल गुरु को 9 फरवरी 2013 को तिहाड़ जेल में फांसी दी गई थी। यह खबर जानते ही सबसे पहला प्रश्न हमारे मन में यही उठता है कि आखिर देश की राजधानी दिल्ली में स्थित जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जेएनयू) जैसे प्रतिश्ठित संसद में ऐसे आयोजन का दुस्साहस करने वाले ये कौन हैं? दूसरा, कि जिस व्यक्ति का संसद हमले में दोश सिद्ध हो चुका है, जिसे उच्चतम न्यायालय के आदेश पर ही फांसी पर चढ़ाये गया हो उस अफजल गुरु को शहीद का दर्जा देकर शहीदी दिवस मनाने वाले छात्रें, युवाओं तथा उसमें शिरकत करने वालों का क्या कहा जाए? कौन हैं ये लोग? ये चाहते क्या हैं? क्या ये भारत की न्याय व्यवस्था पर प्रश्न खड़ा कर रहे हैं? या ये देश में किसी दूसरे प्रकार की अस्थिरता कायम करना चाहते हैं? इसका उत्तर देने के पहले यह प्रश्न तो देश से किया ही जा सकता है कि एक आतंकवादी का इस तरह अगर सरेआम राजधानी में समर्थन होता है, उसे शहीद बताया जाता है तो फिर इन सारे लोगों को आतंकवाद का समर्थन करने वाला क्यों न करार दिया जए?

जो सूचना है उसके अनुसार डेमोक्रैटिक स्टूडेंट यूनियन (डीएसयू) की ओर से जेएनयू के ताप्ती छात्रवास में यह कार्यक्रम रखा गया था। जेएनयू प्रशासन कह रहा है कि उसकी इजाजत के बिना यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। तो उसे रोकने के लिए प्रशासन ने क्या किया? कितनी अजीब बात है कि अफजल की शहादत की याद के शीर्शक से कश्मीर की आजादी के विषय पर एक सेमिनार का आयोजन हो रहा हो, वक्ता आमंत्रित हों, तैयारी चल रही हो, फिर कार्यक्रम हो भी जाये और विश्वविद्यालय प्रशासन केवल यह कहे कि बिना इजाजत के कार्यक्रम हो गया। हालांकि खबरों में विश्वविद्यालय प्रशासन के सूत्रें के हवाले से कहा गया पहले उस कार्यक्रम की इजाजत दी गई थी, लेकिन बाद में विरोध होने पर इजाजत वापस ले लिया गया। लेकिन आयोजकों पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वे पूर्व अनुसार ही कार्यक्रम करने पर अड़े रहे और मजे की बात देखिए कि उसमें उन वक्ताओं ने भी हिस्सा लिया जिनका नाम पहले से घोषित था। यह कैसे संभव हुआ?

अफजल के साथ ही सह अभियुक्त रहे और सबूतों के अभाव में रिहा हुए प्रोफेसर एसएआर गिलानी वहां मुख्य वक्ता थे। खैर, वहां के छात्रें के एक वर्ग ने ही इनसे लोहा लिया। पहले तो कार्यक्रम का विरोध किया। प्रशासन को कुछ करते न देख कार्यक्रम को रोकने की कोशिश की। जब नहीं रुका तो कार्यक्रम शुरू होते ही ताप्ती हॉस्टल की बिजली आपूर्ति काट दी। एसएआर गिलानी को घेरकर उनके खिलाफ नारे लगाये गये। हमें इससे संतोष हो सकता है कि उस कार्यक्रम को छात्रें ने ही अबाधित और सामान्य स्थिति में संपन्न नहीं होने दिया। वास्तव में विरोध करने वाले छात्रें ने इतना तो किया कि वे शांति से कार्यक्रम संपन्न नहीं कर पाए। गिलानी का इतना तगड़ा विरोध हुआ कि जैसे तैसे कार्यक्रम के खत्म होने के बाद ह्यूमन चेन बनाकर उन्हें उनकी गाड़ी तक ले जाया गया। गिलानी दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज में अरबी भाषा के प्रोफेसर हैं। 2001 में भारतीय संसद पर हुए हमले में अदालत ने अफजल गुरु और शौकत हुसैन के साथ-साथ इन्हें भी सजा सुनाई थी। हालांकि, निचली अदालत के फैसले को चुनौती देने पर उच्च न्यायालय ने सबूतों के अभाव में गिलानी को बरी कर दिया था।

गिलानी कह रहे हैं कि मुझे मारने की साजिश थी और इसके पीछे संघ परिवार का हाथ है। इसके अलावा और वे कह भी क्या सकते हैं। संघ परिवार का नाम लेने से उसके विरोधी संगठनों का समर्थन मिल जाता है। वे कह रहे हैं कि मैं तो जेएनयू में डिबेट के लिए गया था, मगर वहां अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लोगों ने मुझ पर हमला करने के मकसद से घेर लिया। भैया, कौन सा डिबेट था? आप अफजल गुरु, जिसकी भूमिका संसद पर हमले में थी, जो घोषित तौर पर आतंकवादी था, उसको उसके किए की सजा मिली तो आप उसे शहीद मानने वाले कार्यक्रम जा रहे हैं। उसमें भी विषय क्या है? कश्मीर की आजादी। ये दोनों अपने आपमें देश विरोधी हरकत है, आतंकवाद का खुलेआम समर्थन है। असल में तो आपको इसकी सजा होनी चाहिए। जो दशभक्त होंगे, वे चाहे जिस संगठन के हों, इसका विरोध करेंगे ही। उन्हें करना ही चाहिए। गिलानी कह रहे हैं कि लोकतंत्र में बोलने की आजादी पर हमला हुआ है। आप तय करेंगे कि लोकतंत्र क्या है और इसमें बोलने की आजादी क्या है? अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आतंकवाद के संबंध में जो कन्वेंज़न बना हुआ है उसमें आतंकवादी के समर्थन में बोलना भी आतंकवाद है और भारतीय कानून में यह अपराध है। विरोध करने वाले छात्रें ने बोलने की आजादी पर हमला नहीं किया। उन्होंने तो भारत के विरुद्ध जहर उगलने का विरोध किया जो हर दृष्टि से उचित है। ऐसे हर कार्यक्रम का पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए।

सच कहा जाए तो यह भारत देश ही है जहां इस प्रकार के कार्यक्रम सार्वजनिक रुप से कोई समूह कर सकता है। उसे अभिव्यक्ति की आजादी करार देकर अपने मौलिक अधिकार से जोर सकता है। वह भूल जाता है मौलिक अधिकारों के साथ कुछ बंदिशें भी हैं। कौन देश होगा जो अपने यहां संसद पर हमला करने वाले के समर्थन में इस तरह कार्यक्रम संपन्न होने देगा? कौन देश होगा जो ऐसे कार्यक्रम करने वालों को यूं ही बिना कानूनी कार्रवाई किये आजाद रहने देगा? लेकिन हमारे यहां यह संभव है। यहां कुछ के लिए कुछ भी बोलने की आजादी है। आखिर जब कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। हमारे संविधान ने जिन राज्यों को अपना अंग माना है उसमें कश्मीर भी है, संसद ने गुलाम कश्मीर तक को वापस लेने का सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया हुआ है तो फिर कश्मीर की आजादी पर बात करने वाले, या उसका समर्थन करने वाले किस श्रेणी के माने जाएंगे? वे देशभक्त माने जाएंगे या देज़द्रोही? खासकर अगर आप एक कश्मीरी आतंकवादी को शहीद मानकर कश्मीर की आजादी पर कार्यक्रम करते हैं तो आपका संदेश यह होता है कि उसने इसके लिए अपनी कुर्बानी दी। यानी आत कश्मीर में आजादी के नाम पर जारी आतंकवाद का भी समर्थन करते हैं। कानूनी एजेंसियां यदि इस पर खमोश या निश्क्रिय हैं तो यह चिंता का विशय है। उसे कार्रवाई के लिए मजबूर करना होगा। इसलिए अब यह देश को तय करना है कि ऐसे लोगों के साथ हम क्या आचरण करें?

-ई.: 30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110092,
दूर.: 011-22483408, 09811027208

सभी सांसदों को भेंट करेंगे ''सत्यार्थ प्रकाश'' व रानी बाग में शोभायात्रा सम्पन्न

शुक्रवार, 27 फरवरी 2015, आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली में आर्य सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी का भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वामी जी ने कहा कि मेरी इच्छा है कि सभी सांसदों को सत्यार्थ प्रकाश भेट किया जाये, आर्य नेता श्री आनन्द चौहान ने कहा कि आर्य समाज डिफेन्स कालोनी इस कार्य में आपको पूरा सहयोग प्रदान करेगा। चित्र में स्वामी सुमेधानन्द जी को शाल व महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट कर सम्मानित करते समाज के मन्त्री श्री अजय सहगल,श्री आनन्द चौहान, प्रधान श्री अजय चौहान व डा.अनिल आर्य। द्वितीय चित्र-रविवार, 1 मार्च 2015, वेद प्रचार मण्डल उतर पश्चिमी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर आर्य समाज, सरस्वती विहार, दिल्ली से, सैनिक विहार, रानी बाग होते हुए आर्य समाज, सन्देश विहार तक शोभा यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। चित्र में डा.अनिल आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री दुर्गेश आर्य, श्री सुरेश आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्री राजकुमार अग्रवाल, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री विनोद कुमार आदि।

महापुरुषों के प्रेरक एवं श्रद्धास्पद महर्षि दयानन्द

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द महाभारत काल के बाद विगत पांच हजार वर्षों में वेदों के पहले ऋषि हुए हैं। उन्होंने वेदों का संस्कृत और हिन्दी में सत्य वेदार्थ वा भाष्य करके मानवता का जो उपकार किया है उसके लिए संसार उनका सदा सर्वदा ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द को ही इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जनसामान्य तक प्रचारित ही नहीं किया अपितु जड़ देवी–देवताओं के यथार्थ स्वरूप से भी सबको परिचित कराया और बताया कि सभी देवी–देवताओं में उपासनीय केवल सृष्टिकर्ता सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर ही है। उन्होंने तर्कों व प्रमाणों से सिद्ध किया कि ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। जो मनुष्य ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयत्न नहीं करते और यथासमय ईश्वरोपासना अर्थात सन्ध्या वा योगाभ्यास नहीं करते वह कृतघ्न होते हैं। कृतघ्न इस कारण कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए यह समस्त संसार वा ब्रह्माण्ड अर्थात् सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, वायु, जल, सुमद्र, नदियां, झरने, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान, वन, वृक्ष, नाना प्रकार के फल–फूल बनाकर व हमें मनुष्य का जन्म देकर माता–पिता–विद्वानों आदि से उपकृत किया है, उसे जानने का प्रयास न करना और जानकर उसकी स्तुति–प्रार्थना और उपासना न करना महा–कृतघ्नता है। हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि जो ईश्वर के सत्य स्वरूप को न जानकर अविधि से भक्ति वा उपासना करता है वह भी एक प्रकार से कृतघ्नों की श्रेणी में ही आता है। इसका कारण यह है कि जिस ईश्वर ने हमें इतने सुख व सुख की सामग्री प्रदान की है क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं बनता कि हम उसके यथार्थ स्वरूप को जानकर उपयुक्त विधि से उसकी उपासना करें? जो ऐसा नहीं करते वह कृतघ्न ही कहे जा सकते हैं। अतः सभी मनुष्यों को ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसकी उपासना करनी चाहिये। ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानने व सही विधि से उपासना करने के लिए महर्षि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि सहित उनके जीवन चरित्र आदि का अध्ययन भी सहायक है एवं इनसे लाभ उठाना चाहिये और मानव जीवन को सफल कर जीवोन्नति करनी चाहिये जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति हो सके।

प्रस्तुत लेख में हम महर्षि दयानन्द के विषय में देश के कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत कर रहे हैं जिनसे उनके स्वरूप व व्यक्तित्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि महर्षि दयानन्द जी के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवजीवन, नवचेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। देश की आजादी के लिए अपना जीवन एवं सर्वस्व समर्पित करने वाले और दो जन्मों के कारावास की सजा पाने वाले महान क्रान्तिकारी और देश भक्त वीर विनायक सावरकर जी ने कहा है कि महर्षि दयानन्द जी स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने राष्ट्र की महान सेवा की है और कर रहा है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम जिह्वा पर आते ही हृदय उनके उपकारों व देशभक्ति के कार्यों को स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा से भर जाता है। वह वस्तुतः भारत माता के अनूठे, महान, परम देशभक्त सपूत थे और उन्होंने अपना सर्वस्व भारत माता को अर्पित किया। वह महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की प्रशंसा करते हुए कहते है कि संगठन कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द के विषय में श्री अनन्तशयनम् आयंगर जी ने लिखा है कि गांधीजी राष्ट्र के पिता थे, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। श्री आयंगर जी के इस कथन के आधार पर हम यह कहना चाहेंगे कि श्री आयंगर जी ने जितना महर्षि दयानन्द को समझा था उतना किसी राजनैतिक दल व उसके नेता ने उन्हें नहीं समझा अथवा महर्षि दयानन्द जिस सम्मान के अधिकारी थे, राजनैतिक कारणों से वह उनको प्रदान नहीं किया गया।

देश की आजादी में लाला लाजपतराय जी का महान योगदान है। शहीद भगत सिंह ने लालाजी पर अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण ही सांडर्स को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाया था जिसमें शहीद चन्द्रशेखर आजाद, शहीद सुखदेव, शहीद राजगुरू, आजादी की जीवित शहीद दुर्गाभाभी व अन्य अनेक क्रान्तिकारी सम्मिलित थे। लाला लाजपतराय जी लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द जी मेरे गुरू हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को गुरू माना है। वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। भारत के प्रथम उपप्रधान मंत्री और तेजस्वी व यशस्वी गृहमंत्री लौहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल ने भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि मैं ऋषि दयानन्द जी को अपना राजनैतिक गुरू मानता हूं। मेरी दृष्टि में तो ये महान विप्लववादी नेता और राष्ट्र विधायक थे। हम सभी यह जानते हैं कि लगभग 600 स्वतन्त्र रियासतों सहित कश्मीर का भारत में विलय कराने में सरदार पटेल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका थी। यदि वह राजनैति में न होते तो कह नहीं सकते कि स्वतन्त्र भारत का स्वरूप क्या होता परन्तु यह निश्चित है कि जो अब है वह कदापि न होता क्योंकि अनेक रियासतें या तो स्वतन्त्र रहतीं या पाकिस्तान आदि में अपना विलय करती जो कश्मीर की ही तरह भारत के लिए सिरदर्द का काम करतीं। देश की आजादी के एक और प्रमुख नेता और क्रान्तिकारी देवतास्वरूप भाई परमानन्द ने भी महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। भाई परमानन्द जी जब अफ्रीका में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गये थे तो महात्मा गांधी ने वहां उनके दर्शन कर सान्निध्य प्राप्त किया था और श्रद्धावश उनका बिस्तर अपने कंधे वा सिर पर उठा लिया था। परमानन्द जी ने लिखा है कि स्वामी दयानन्द एक ऐसे प्रकाश के स्तम्भ हैं जिन्होंने असंख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूं।

यह भी उल्लेखनीय है कि आजादी के आन्दोलन में काकोरी काण्ड के विख्यात मास्टरमाइण्ड शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल उनकी साक्षात शिष्य परम्परा में थे। शहीद अशफाक उल्ला खां के साथ उनकी मित्रता व सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध जातीय वा कौमी एकता का प्रशंसनीय उदाहरण है। यह भी तथ्य है कि देश की आजादी के आन्दोलन में लगभग 80 प्रतिशल आन्दोलनकारी महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित होते थे। क्रान्तिकारियों के अग्रणीय व आद्यगुरू व आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्म्मा भी उनके साक्षात् शिष्य थे व उन्हीं की प्रेरणा इंग्लैण्ड गये थे। उनकी परम्परा में वीर सावरकर एवं अन्य क्रान्तिकारी हुए हैं। महाराष्ट्र के महादेव गोविन्द रानाडे महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य थे। आपने ही उन्हें पूना में आमत्रित कर उनके प्रवचन कराये थे। श्री रानाडे गोपालकृष्ण गोखले के राजनैतिक गुरू थे और गोखले जी के शिष्य महात्मा गांधी थे। इस प्रकार हम देखते हैं देश की आजादी की नरम व गरम दोनों धाराओं के आद्यगुरू महर्षि दयानन्द थे। इस आधार पर कांग्रेस के नेता श्री अनन्तशयनम् अय्यंगर जी का महर्षि दयानन्द को देश का पितामह कहना सर्वथा उचित व युक्तिसंगत है। अमेरिकन महिला मैडम बेलेवेटेस्की ने उनको श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि जब भारत में आजादी का मन्दिर बनेगा तो उसमें सबसे ऊंची मूर्ति महर्षि दयानन्द की होगी।

हम अपने अध्ययन के आधार पर यह कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द जैसा देशभक्त, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, मानवमात्र का हितैषी, सत्यप्रेमी, असत्यद्वेषी, वेदप्रचारक, वेदर्षि, महर्षि, आप्तपुरूष, योगेश्वर, ईश्वर के सच्चे स्वरूप का अनुसंधानकर्ता व प्रचारक, वेदों का उद्धारक, अवैदिक मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, सभी धार्मिक अन्धविश्वासों व मांसाहार आदि असत्य कार्यों का विरोधी व खण्डनकर्त्ता, स्वराज्य–सुराज्य का मन्त्रदाता एवं पोषक, वैदिक अहिंसक यज्ञों के पुनरोद्धारक प्रचारक व उन्हें वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने वाला, मानवमात्र के हितैषी भगवान मनु पर लगाये गये मिथ्या आरोपों व दोषों से उन्हें मुक्त व निर्दोष सिद्ध करने वाला, स्त्रियों की शिक्षा, उनके स्वयंवर विवाह, स्त्रियों का वेदाध्ययन, उनको ऋषिका बनाने का मार्ग प्रशस्त करने वाला व उन्हें पुरूषों के समान वरन् उनसे कुछ अधिक अधिकार प्रदान करने वाला, शूद्रों, श्रमिकों, निर्धनों व किसानों का सच्चा समर्थक, हितैषी व उद्धारकर्ता तथा उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार देकर उन्हें मानव समाज के शिखर पुरूष अर्थात् ऋषि–ब्राह्मण बनाने का अवसर देने वाला उनके समान अन्य महापुरूष देश व संसार में दूसरा नहीं हुआ। उनके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं वेदभाष्य आदि ग्रन्थों से शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण कर व उसे क्रियान्वित कर ही हमारा देश संसार का गुरू बन सकता है। इन्हीं पंक्तियों के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

– 196, चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, मो. 09412985121

शोक समाचार

1. प्रो. जयदेव आर्य (पत्रकार, लेखक, हिन्दी सेवी) का निधन।
2. श्री आनन्दप्रकाश गुप्ता (आर्य समाज, डी ब्लॉक, जनकपुरी) का निधन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

वीर भरत की जन्म स्थली ''गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार'' का वसन्त उत्सव सम्पन्न

रविवार, 22 फरवरी 2015, गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार,पौढ़ी गढ़वाल का वसन्त उत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में योगीराज ब्र. विश्वपाल जयन्त को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, डा.जयदीप आर्य (केन्द्रीय प्रभारी, पंतजलि योग पीठ, हरिद्वार), कै. अशोक गुलाटी, श्री विश्वनाथ आर्य, श्री बलराज सेजवाल व दिनेश आर्य। द्वितीय चित्र–डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए।

आर्य समाज उत्तम नगर व नांगलोई का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 1 मार्च 2015, पश्चिमी दिल्ली की विशिष्ट आर्य समाज, उतम नगर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर ''संगीत संध्या'' का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते आचार्य भद्रकाम वर्णी, श्री अंकित उपाध्याय, मंत्री श्री अमरसिंह सहरावत व प्रधान श्री राजकुमार भाटिया। द्वितीय चित्र–रविवार, 1 मार्च 2015, आर्य समाज, नांगलोई, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा. अनिल आर्य का स्वागत करते प्रधान श्री ओमप्रकाश अग्रवाल। मन्त्री श्री यशपाल आर्य ने आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज, इन्द्रापुरम, गाजियाबाद ने किया 21 कुण्डीय यज्ञ

रविवार, 22 फरवरी 2015, आर्य समाज,इन्द्रापुरम, गाजियाबाद ने पहल ग्रुप के सहयोग से 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया। डा.जयेन्द्र आचार्य ने यज्ञ करवाया व श्री सन्दीप आर्य के मधुर भजन हुए। चित्र में डा.राजकुमार आर्य का स्वागत करते प्रधान श्री विजय आर्य व मन्त्री श्री यज्ञवीर चौहान। सामने श्रद्धालु आर्य जन।

श्री इन्द्रेश जी व डा.अनिल आर्य - श्री सतेन्द्र जैन का किया स्वागत

केन्द्रीय मन्त्री डा. महेश शर्मा की सुपुत्री पल्लवी के विवाह के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अधिकारी श्री इन्द्रेश जी व परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य । द्वितीय चित्र–दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सतेन्द्र जैन का स्वागत करते श्री ओमप्रकाश गुप्ता,डा.अनिल आर्य,श्री सुरेश आर्य,श्री विनोद कुमार,श्री अरूण आर्य।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970